Dr. Ram Narain Mishra
Deptt. of philosophy
S.B. College, Ara.

ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण : देकार्त

देकार्त ने ईश्वर को सिद्ध करने के लिए कुछ युक्तियाँ प्रदान की है। वस्तुतः देकार्त के पूर्व भी ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए युक्तियों का प्रयोग किया गया था। ईश्वर ऐसे तो स्वयं सिद्ध तथ्य है। परंतु दार्शनिकों के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को तर्क के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास किया गया। देकार्त इसके लिए चार प्रकार के युक्तियों का प्रयोग करते हैं। ये हैं —

1. निगमन तर्क
2. सत्ता मूलक तर्क
3. कार्य कारण मूलक तर्क
4. निमित्त कारण मूलक तर्क

देकार्त द्वारा प्रदत्त इन तर्कों का विवेचन इस प्रकार है —

Scanned with CamScanner

देकार्त ने ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए ये प्रमुख प्रमाण दिये हैं[२]:-

प्रथम है, निगमन तर्क। मुझे अपने स्वतःसिद्ध आत्मा की निर्विकल्प अनुभूति होती है। जिस पदार्थ की इतनी सुस्पष्ट और प्रकाशमय अनुभूति हो, वह पदार्थ भी, आत्मा के समान ही, सत्य होना चाहिए। मुझे ईश्वर की भी सुस्पष्ट अनुभूति हो रही है। अतः निष्कर्ष निकला कि आत्मा के समान ईश्वर

Scanned with CamScanner

का भी सत्य अस्तित्व है। आत्मा के और ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि में इतना भेद है कि आत्मा की सिद्धि होती है निर्विकल्प प्रत्यक्ष से और ईश्वर की सिद्धि होती है निगमनात्मक अनुमान से।

द्वितीय है, सत्तामूलक अनुभूति का तर्क। ईश्वर के विषय में ज्ञानमात्र से उनकी सत्ता सिद्ध होती है। हमें ईश्वर का ज्ञान होता है, अतः ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर पूर्ण हैं। यदि उनकी 'सत्ता' न होती, तो वे अपूर्ण होते। अतः उनकी पूर्णता में उनकी सत्ता भी अन्तर्निहित है। सन्त एनसेल्म और सन्त आगस्टाइन ने भी यह तर्क दिया था। देकार्त ने इसको विशद रूप दिया है। ईश्वर-विषयक ज्ञान से उनकी अनिवार्य सत्ता पृथक् नहीं की जा सकती। पूर्ण और अनन्त की कल्पना में अस्तित्व का भी समावेश हो जाता है। यदि ईश्वर में अस्तित्व की कमी हो, तो उस अंश में वे अपूर्ण होंगे और 'अपूर्ण ईश्वर' वदतोव्याघात है। संसार के सब पदार्थ अपूर्ण हैं। अतः उनके विचार-मात्र से उनकी सत्ता प्रमाणित नहीं होती। किन्तु ईश्वर पूर्ण हैं। अतः उनके विषय में विचारमात्र से उनकी सत्ता सिद्ध हो जाती है। यह अनुमान नहीं है। "मैं हूँ" के समान यह भी निर्विकल्प प्रत्यक्ष है। इस अनुभूति की तर्क द्वारा अभिव्यक्ति और पुष्टि करने के कारण इसे सत्तामूलक अनुभूति का तर्क कहा गया है।

तृतीय है, कार्य-कारण-भाव मूलक तर्क। कार्य-कारण-भाव एक स्वतःसिद्ध मौलिक अनुभव है। प्रत्येक कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होना चाहिए। बिना कारण के कार्य नहीं होता। असत् से असत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती। मेरी बुद्धि में 'ईश्वर है' ऐसा विचार उत्पन्न होता है। इस विचार का भी कोई-न-कोई कारण होना चाहिए। यह विचार पूर्ण और अनन्त ईश्वर का विचार है। अतः इसका कारण भी पूर्ण और अनन्त होना चाहिए, क्योंकि कारण कार्य से न्यून नहीं हो सकता। अतः ईश्वर को ही इस विचार का कारण मानना पड़ता है। यदि ईश्वर नहीं होते तो हमारी बुद्धि में पूर्ण और अनन्त ईश्वर का विचार भी नहीं उत्पन्न होता। यह विचार इन्द्रियानुभव से उत्पन्न नहीं होता। इन्द्रियाँ कभी पूर्ण और अनन्त का ज्ञान नहीं कर सकतीं। वे केवल परिमित और अस्त-व्यस्त विशेषों का ही संवेदन कर सकती हैं। इस संवेदन में ज्ञान का अंश क्षीण और धुँधला रहता है। इसीलिए इन्द्रियानुभव को बुद्धि द्वारा पुष्ट करना पड़ता है। यह विचार मेरी बुद्धि की कल्पना भी नहीं हो सकता, क्योंकि मेरी बुद्धि परिमित, अल्पज्ञ और अपूर्ण है और यह विचार पूर्ण और अनन्त ईश्वर विषयक विचार है। अतः स्वयं ईश्वर को ही इस विचार का कारण मानना पड़ता है। इसलिए ईश्वर की सत्ता सिद्ध है। सत्ता-मूलक अनुभूति के तर्क द्वारा ईश्वर की सत्ता ईश्वर-विषयक विचारमात्र से सिद्ध

की गई है। 'ईश्वर की पूर्णता में सत्ता का भी समावेश है'—इस प्रकार का निर्विकल्प अनुभूति के आधार पर यह तर्क उपस्थित किया गया है कि यदि ईश्वर की सत्ता नहीं होती तो वे पूर्ण नहीं होते और चूँकि ईश्वर की पूर्णता निर्विकल्प अनुभूति से सिद्ध है, अतः ईश्वर की सत्ता भी सिद्ध है। कार्यकारण-भावमूलक तर्क द्वारा ईश्वर को मानवी बुद्धि में उत्पन्न ईश्वरविषयक **विचार का कारण** मानकर उनकी सत्ता सिद्ध की गई है। यही इन दोनों तर्कों में भेद है।

चतुर्थ है, निमित्त-कारण-मूलक तर्क। यह तर्क कार्य-कारण-भाव-मूलक तर्क का ही रूपान्तर है। भेद इतना ही है कि कार्य-कारण-भाव-मूलक तर्क ईश्वर को मानवी बुद्धि में उत्पन्न ईश्वरविषयक विचार का कारण मानकर ईश्वर की सत्ता सिद्ध करता है, और निमित्त-कारण मूलक तर्क ईश्वर को इस सम्पूर्ण सृष्टि का निमित्त-कारण मानकर उनकी सत्ता सिद्ध करता है। इन दोनों तर्कों में हम कार्य से कारण की ओर जाते हैं, कार्य के आधार पर कारण की सत्ता सिद्ध करते हैं। यह सम्पूर्ण सृष्टि परिमित और सान्त है। यह जड है और कार्यरूप है। अचित् या जड तत्व स्वयं सृष्टि की रचना नहीं कर सकता।[1] वह केवल उपादानकारण बन सकता है। और चेतन निमित्तकारण की अपेक्षा रखता है। बिना चेतन निमित्तकारण के सृष्टि की रचना नहीं हो सकती। यह निमित्तकारण ईश्वर है। यदि परिमित और सान्त की सत्ता है, तो अपरिमित और अनन्त भी होना चाहिए। यदि कार्य है, तो कारण भी होना चाहिए। और ईश्वर ही यह अपरिमित और अनन्त कारण है। ईश्वर कारण-रूप ही हैं (Causa Sui) वे स्वयं कार्यरूप नहीं हैं। यदि उनको भी कार्य माना जाय, तो फिर ईश्वर का भी कोई अन्य कारण खोजना पड़ेगा और इस प्रकार अनवस्था दोष आयेगा।

ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए देकार्त बहुत प्रयत्नशील और उत्सुक हैं। वे ईश्वर-सिद्धि को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझते हैं; क्योंकि ईश्वर को सिद्ध किये बिना उनका दर्शन "मैं हूँ" से आगे नहीं बढ़ता। ज्ञाता की अनिवार्य सत्ता सिद्ध करने के बाद बाह्य जगत् की सत्ता सिद्ध करने के लिए ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। ईश्वर की सत्ता सिद्ध होते ही बाह्य जगत् की सिद्धि भी ईश्वर की सृष्टि के रूप में हो जाती है। बाह्य जगत् प्रवञ्चना नहीं हो सकता; क्योंकि वह ईश्वर-सृष्ट है और ईश्वर प्रवञ्चक नहीं हैं।

---

१. वेदान्त द्वारा कृत सांख्य का खण्डन।